70th Anniversary of the establishment of Diplomatic Relations between India and Mongolia

For most Mongolians, India is a "spiritual neighbour," a declared 'third neighbour', a 'strategic partner', and a centre for pilgrimage. Lately, the 4 Ds Dharma, Democracy, Development Partnership, and Digital Development Cooperation have become pillars of the Mongolian relationship. Historically, India and Mongolia have interacted through the shared heritage of Buddhism.

It is believed that some tribes from the Kangra kingdom migrated to Mongolian territory 4300 years ago with Mangaldev, son of the Kangra king, and the majority of them returned to India after staying there for about 2000 years, though there is no historical evidence yet to prove this. In 1924, Mongolian PM A. Amar proposed in his book that Mongolian ancestors could have come from the Himalayas.

The 'Ganga Nuur' lake is believed to have derived its name from the Ganga River in India. As per the popular legends some Mongolian Lamas brought water from Ganga and poured it into the lake in Sukhbaatar Province and named it so. As for Buddhism, it appears to have traversed to Mongolian steppes through Tibet and the Himalayan region. During the Hunnu State and Great Mongol Empire periods, Buddhist monks and Indian traders visited Mongolia. In 552 BC, a Lama Narendrayash from the State of Udayana (Northern India) with some others visited Nirun state. Since India is regarded as the land of Buddha, Lamas and students from Mongolia used to travel to Nalanda, once the largest residential University in India, to study Buddhism.

These accounts confirm that both India and Mongolia were in close direct contact especially during 5-7 centuries AD and it seems that Buddhism in Mongolia accelerated the process of further spread of Indian culture in Mongolia. The intellectual development of Mongolia is ostensibly influenced by the Mahayana school of Buddhism, its philosophy and the philosophical treaties of Nagarjuna used in simplified expression and terminology.

Mongolian Buddhism is predominantly the Yellow Hat sect of Buddhism practiced in Tibet and China, but over the centuries, it has evolved into its own version, having incorporated the pre-Buddhist religion of 'Tengarism' as well as 'Shamanistic' influences.

Over the last few decades, India-Mongolia relations have been on upward trajectory with several high-level visits further consolidating the relations. Late Ambassador 19th Bakula Rimpoche, during his 10 years' tenure in Mongolia from 1990-2000, contributed immensely to consolidating this legacy of Buddhist connection with India and was instrumental in reviving hundreds of Buddhist monasteries in Mongolia and setting up of revered Pethub Monastery in Ulaanbaatar city. The relations have deepened, intensified and consolidated our shared heritage of Buddhism with Mongolia.

The diplomatic relations with Mongolia were established on 24th December 1955 and in January 1956, the first Mongolian Ambassador was posted to New Delhi. However, the Resident Mission of India in Ulaanbaatar was opened on 22 February 1971 and before that Indian Ambassador in Moscow (T.N. Kaul) was concurrently accredited. In 2020, the Embassy of India marked the 65th anniversary of India-Mongolia diplomatic relations during which a special commemorative stamp by Mongol Post on the 65th anniversary was released in Dec 2020 by Hon. External Affairs Minister of India.

India Post proudly releases joint postage stamp to commemorate 70th Anniversary of the establishment of Diplomatic Relations between India and Mongolia.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Shri Suresh Kumar
Text	:	Referenced from content provided by Ministry of External Affairs

डाक विभाग
Department of Posts

विवरणिका BROCHURE



भारत और मंगोलिया के बीच
राजनयिक संबंधों की स्थापना की 70वीं वर्षगांठ

70TH ANNIVERSARY OF THE ESTABLISHMENT OF DIPLOMATIC RELATIONS BETWEEN INDIA & MONGOLIA

भारत और मंगोलिया के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के 70 वर्ष

मंगोलिया के अधिकांश लोगों के लिए भारत एक "आध्यात्मिक पड़ोसी", घोषित 'तीसरा पड़ोसी राष्ट्र', 'रणनीतिक साझेदार' और 'तीर्थ स्थान का केंद्र' है। हाल के वर्षों में, 4डी सिद्धांत अर्थात् धर्म, लोकतंत्र, विकासात्मक साझेदारी और डिजिटल विकास संबंधी सहयोग, भारत–मंगोलिया के बीच सुदृढ़ संबंधों के आधारभूत स्तंभ बन गए हैं। ऐतिहासिक रूप से भारत और मंगोलिया बौद्ध धर्म की साझी विरासत के माध्यम से जुड़े हुए हैं।

कहा जाता है कि कांगड़ा साम्राज्य की कुछ जनजातियां लगभग 4300 वर्ष पूर्व कांगड़ा राजा के पुत्र, मंगलदेव के साथ मंगोल क्षेत्र में जा कर बस गईं थीं और उनमें से अधिकांश, लगभग 2000 वर्ष उपरांत भारत वापस लौट आई थीं। हालांकि इस तथ्य को सिद्ध करने हेतु अभी तक कोई ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं है। 1924 में मंगोलिया के प्रधानमंत्री ए. अमर ने अपनी पुस्तक में यह विचार प्रकट किया कि मंगोलों के पूर्वज हिमालय से आए हो सकते हैं।

माना जाता है कि 'गंगा नूर' झील का नाम भारत की गंगा नदी पर आधारित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, कुछेक मंगोलियाई लामाओं द्वारा गंगा नदी से लाया हुआ जल सुखबाटर प्रांत की झील में मिलाया गया था। इसलिए इस झील को 'गंगा नूर' नाम दिया गया। जहां तक बौद्ध धर्म का संबंध है, ऐसा प्रतीत होता है कि बौद्ध धर्म का प्रसार तिब्बत और हिमालय के रास्ते मंगोलियाई क्षेत्रों तक हुआ। हुन्नू राज्य और महान मंगोल साम्राज्य के दौरान, बौद्ध भिक्षुओं और भारतीय व्यापारियों द्वारा मंगोलिया की यात्राएं की गईं। 552 ईसा पूर्व, उदयन राज्य (उत्तरी भारत) से लामा नरेंद्रयश ने कुछेक अन्य लामाओं के साथ निरुन राज्य की यात्रा की। चूंकि भारत को बुद्ध की कर्मभूमि और ज्ञानभूमि माना जाता है, अतः अनेक मंगोलियाई छात्र और लामा बौद्ध धर्म के अध्ययन के लिए, एक समय में भारत के सबसे बड़े आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में सुविख्यात नालंदा आते थे।

ये तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि दोनों देश, विशेष रूप से पांचवीं से सातवीं शताब्दी के दौरान, एक दूसरे के निकट संपर्क में रहे। प्रतीत होता है कि मंगोलिया में भारतीय संस्कृति के विस्तार एवं प्रचार–प्रसार में बौद्ध धर्म की विशेष भूमिका रही है। मंगोलियाई बौद्ध विचारधारा स्पष्ट रूप से बौद्ध धर्म की महायान विचारधारा, उसके दर्शन तथा सरल अभिव्यक्ति एवं शब्दावली वाले नागार्जुन के दार्शनिक सिद्धांतों से प्रभावित है।

मंगोलियाई बौद्ध धर्म, मुख्य रूप से तिब्बत और चीन में प्रचलित बौद्ध धर्म के 'येलो हैट' संप्रदाय का ही रूप है। हालांकि समय के साथ इसका एक स्वतंत्र नया रूप विकसित हुआ, जिसमें बौद्ध धर्म से पूर्व के 'टेंग्रिज़्म' के साथ–साथ "शामनिस्टिक" प्रभाव भी समाहित है।

पिछले कुछ दशकों में हुए अनेक उच्च स्तरीय दौरों के फलस्वरूप भारत–मंगोलिया के संबंधों में और सुधार हुआ है, जिससे दोनों देशों के आपसी संबंध और अधिक सुदृढ़ हुए हैं। 1990–2000 तक मंगोलिया में भारत के राजदूत रहे 19वें बकुला रिन्पोछे ने अपने 10 वर्षों के कार्यकाल के दौरान दोनों देशों की बौद्ध धर्म की साझी विरासत को सुदृढ़ बनाने में अहम योगदान दिया। उन्होंने, मंगोलिया में सैकड़ों बौद्ध मठों के पुनरुद्धार और उलानबाटर शहर में प्रतिष्ठित पेथुब मठ की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन संबंधों ने मंगोलिया के साथ बौद्ध धर्म की हमारी साझा विरासत को सहेजने, इसका विस्तार करने और इसे सुदृढ़ बनाने में अहम भूमिका निभाई है।

मंगोलिया के साथ राजनयिक संबंधों की स्थापना 24 दिसंबर 1955 को हुई और जनवरी 1956 में मंगोलिया के पहले राजदूत को नई दिल्ली में तैनात किया गया। हालांकि, उलानबाटर में भारत का रेजिडेंट मिशन 22 फरवरी 1971 को खोला गया। इससे पहले मॉस्को में भारत के राजदूत श्री टी.एन. कौल ही मंगोलिया में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। वर्ष 2020 में, भारतीय दूतावास ने भारत–मंगोलिया के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 65वीं वर्षगांठ मनाई। इस दौरान, दिसंबर 2020 में राजनयिक संबंधों के 65 वर्ष पूरे होने के अवसर पर भारत के माननीय विदेश मंत्री ने मंगोल पोस्ट द्वारा जारी किए जा रहे विशेष स्मारक डाक–टिकट का विमोचन किया।

भारतीय डाक, भारत और मंगोलिया के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के 70 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में संयुक्त डाक–टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है।

आभार:

डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण कैशे पाठ : श्री सुरेश कुमार

: विदेश मंत्रालय द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: 5000 पैसे, 5000 पैसे, : 5000p, 5000p,
सोविनियर शीट मूल्य Souvenir Sheet Price	: 10000 : 10000
मुद्रित सोविनियर शीट Souvenir Sheets Printed	: 113100 : 113100
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: वेट ऑफसेट : Wet Offset
मुद्रक Printer	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद : Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00